स्नात्र पूजा

देवचंदजीकृता

पुस्तक जैनधर्मि वांचनाराओने

अर्थे शुद्धकरीनें

मुंबई मध्ये,

ज्ञानदीपक छापखानामां

शा० ठकेमाभाई शिवजीए

छाप्युं छे.

सं १९२९ भाद्रपद शु० ५ गुरौ दिने.

सपटेंबर सने १८७३.

॥ श्री ॥

॥ अथश्रीदेवचंदजीकृतस्नात्र ॥

॥ पूजालिख्यते ॥

चोत्रिसयअतिशयजूउ ॥ वचनातिशय
जुत्त ॥ सोपरमेश्वरदेखजवि ॥ सिंघास
णसंपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंघासणबेठाजग
भाण॥देखीभविकजनगुणामणिखाण॥
जेदीठेतुम्हनिर्मलनाण॥
दयठाण ॥ कुसुमांज
दा ॥ तोराचरणकम
वीससोभागी॥ चोवी
जिणं ॥कुसुमांजलि

तसुरंगनिरत्त ॥१॥ ढाल॥ जोनिजआत्म
गुणआनंदि ॥ पुग्गलिसंगेजेह्अफंदि ॥
जोपरमेश्वरनिजपदलीन ॥ पूजोप्रणमोज
व्यअदीन ॥ कुसुमांजलिमेलोशांतिजि
णंदा ॥तोराचरणकमलसेवेचौसठइंदा॥
कुसुमांजलि० ॥ २ ॥ निम्मलनाणपद्दा
यर ॥ निम्मलगुणसंपन्न ॥ निम्मलध
म्मुवएसकर ॥ सोपरमप्पाधन्न ॥ ढाल ॥
लोकालोकप्रकाशकनाणी ॥ नविजनता
...णी ॥ परमानंदतणीनिशा
...तिवराणी ॥ कुसुमां
...॥ ३ ॥ जेसिद्धासि
...तिअनंत ॥ जसआ
...सेवोअरिहं... श

इंद्रादिकजसुचरणपखाले ॥ कुसुमांजलि
मेलोपार्श्वजिणंदा ॥४॥गाथा ॥ समदिट्ठी
देशजय॥सङ्कुसाङ्कुणीसार॥ आचारजउ
वज्झायमुनि॥ जोंनिम्मलआधार॥ढाल॥
चोवीहसंघजेमनधाखो॥मोक्तणोकार
णनिरधाखो ॥ विविहकुसुमवरयाजगदे
वी ॥तसुचरणेमुक्कमतिठवेवी ॥ कुसुमां
जलिमेलोवीरजिणंदा॥तो०चरणकमल०
॥५॥ वस्तु पंसयलजिनवर ॥१॥नमिअ
मनरंग ॥ कल्लाणकविहिसघंवीअ॥ करी
सधम्मसुपवित्तसुंदर ॥ सयएगसत्तरिति
त्थंकर॥ एगसमयविहरंतिमहीयल ॥ च
वणसमयएगवीसजिण ॥ जमणसमय
एगवीस ॥ भत्तियभावेपूजिया ॥ करोसं
घसुजगीस ॥ ६ ॥
ढाल ॥ एकदिनअचिराङ्कुलरावती ॥ ए

देशी ॥ भवत्रीजेसमकितगुणरम्या ॥ जिनभक्तिप्रमुखगुणपरणम्या॥ तजीइंद्रिय सुखश्रासंसना ॥ करीथानकवीसनीसेवना ॥ १ ॥ अतिरागप्रशस्तप्रभावता ॥ मनभावनाएह्वीजावता ॥ सविजीव करुंशासनरसी ॥ एसीजावदयामनउल्लसी ॥ २ ॥ लहीपरिणामएह्वुंभलुं ॥ निपाइजिनपदनिरमलुं ॥श्रायुबंधविचेएक जवकरी ॥ श्रद्धासंवेगतेथिरंधरी ॥ ३ तिहांचवीयलहेनरजवउदार ॥ जरतेतिमऐरवतेजसार॥महाविदेहविजयप्रधान मज्झखंमेअवतरेजिननिधान ॥ ४ ॥ ढाल ॥ पुन्येसुपनदेखे॥ मनमांहरषविशेषे॥गजवरउज्जलसुंदर॥निर्मलवृषभमनोहर ॥ १ ॥ निर्भयकेसरीसिंह ॥ लक्ष्मी अतिहिअबीह ॥ अनोपमफुलनीमाल॥

निर्मलशशिसुकमाल ॥ १ ॥ तेजतरणि
अतिदीपे ॥ इंद्रध्वजाजगजीपे ॥ पूरण
कलशपंकूर ॥ पद्मसरोवरपूर ॥ ३ ॥ इ
गीआरमेरयणायर ॥ देखेमातागुणसा
यर ॥ बारमेभुवनविमान ॥ तेरमेअनो
पमरत्ननिधान ॥ ४ ॥ अग्निशिखानिर
धूम ॥ देखेमाताजीअनोपम ॥ हरषी
रायनेभाषे ॥ राजाअर्थप्रकाशे ॥ ५ ॥
जगपतिजिनवरसुखकर ॥ होसेपुत्रम
नोहर ॥ इंद्रादिकजसुनमसे ॥ सकलमनो
रथफलसे ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ पुन्यउदय ॥ १ ॥
उपनाजिननाह ॥ मातातवरयणीसमे ॥
देखीसुपनहरषंतजागीय ॥ सुपनकहेनि
जकंतने ॥ सुपनअर्थसांभलोसोभागी ॥
त्रिभुवनतिलकमहागुणी ॥ होसेपुत्रनिधा
न ॥ इंद्रादिकजसुपायनमी करसेसिद्धवि

धान ॥ ढाल ॥ देशीचंद्राउलानी सोहम
पतिआसनकंपीउए ॥ देईअवधेमनआ
नंदीउए ॥ मुजआत्मनिर्मलकरणकाज
नवजलतारणप्रगटयोजिनराज ॥ १ ॥ भ
वअरुविपारगसवाह ॥ केवलनाणाए
अगुणअगाह॥शिवसाधनगुणअंकूरजेह
कारणउलटयोआसाढीमेह ॥ २ ॥ हर
षेविकसेतवरोमराय ॥ वलयादिकमांनि
जतनुनमाय ॥ सिंहासनथीऊठयोसुरिं
द ॥ प्रणमतोजिनआनंदकंद ॥ ३ ॥ स
गअरुपयसाहमोआवीतव ॥ करीअंज
लीअप्रणमीअमव ॥ मुखेभाषेएरुण
आजसार ॥ तिअलोयपहुदीगोउदा
र ॥ ४ ॥ रेरेनिसुणोसुरलोयदेव ॥ विष
यानलतापतनुमयसेव ॥ तसुशांतिकर
णजलधरसमान ॥ मिथ्याविषचूरणग

रूमवाहन ॥ ५ ॥ तेदेवजगतारणसमत्व
प्रगटचोतसुप्रणमीहवोसनाथ ॥ एमजं
पीशक्रस्तवकरेवी ॥ तवदेवदेवीहरषेसु
णेवी ॥ ६ ॥ गावेतवरंभागीतगान ॥
सुरलोकहवोमंगलनिधान ॥ नरक्षेत्रेआ
रजवंशठाम ॥ जिनराजवधेसुरहरषधा
म ॥ ७ ॥ पितामाताघरउत्सवअलेख॥
जिनशासनमंगलअतिविशेष ॥ सुर
पतिदेवादिकहर्षसंग ॥ संयमअर्थीज
ननेउमंग ॥ ८ ॥ शुभवेलालग्नेतीर्थ
नाथ ॥ जनम्याइंद्रादिकहर्षसाथ ॥ सु
खपाम्यात्रिभुवनसर्वजीव ॥ वधाईव
धाईथईअतीव ॥ ए ॥ ढाल ॥ शांतिने
कारणेइंद्रकलशाभरे ॥ एदेशी ॥ श्रीती
र्थपतिनोकलशमज्जन ॥ गाईएसुखकार
नरक्षेत्रमंमण ॥ दुहविहंमण ॥ भविक

मनआधार ॥ तिहांराउराणाहर्षउत्सव
थयोजगजयकार॥ दिशिकुमरीअवधिवि
शेषजाणी ॥ लह्योहर्षअपार॥ १ ॥नीअ
अमरअमरीसंगकुमरी ॥ गावतीगुणछं
द ॥ जिनजननीपासेआवीपोहोती ॥ म
हगतीआणंद ॥ हेमायतेंजिनराजजायो
सचिवधायोरम्म ॥ अम्हजम्मनिम्मलक
रणकारण ॥ करीससुंईअकम्म ॥ २ ॥ति
हांजोमीशोधन ॥ दीपदर्पण ॥ वायवी
ऊणधार ॥ तिहांकरीयकंदलीगेहजिनवर
जननीमज्जनकार ॥वरराखमीजिनपाणी
बांधी ॥ दीएएमआशीस ॥ युगकोमको
मीचिरंजीवो ॥ धर्मदायकईस ॥ ३ ॥
॥ढाल॥ एकवीसानी ॥ जिनरयणीजी ॥
दशदिशउज्जलताधरे ॥शुजलग्नेजी ॥ ज्यो
तिषचक्रेसंचरे ॥ जिनजनम्याजी॥ जिण

अवसरमाताघरे ॥ तिणअवसरजीइंद्रा
सनपणथरहरे ॥ त्रोटक ॥ थरहरेआसन
इंद्रचिंतेकोणअवसरएबन्यो ॥ जिनजन्म
उत्सवकालजाणीअतिआनंदउपनो ॥ नि
जसिद्धिसंपतिहेतुजिनवर ॥ जाणीभ
क्तेउमह्यो ॥ विकसितवदनेप्रमोदवधते॥
देवनायकगहगह्यो ॥१॥ ढाल ॥ तवसुर
पतिजीघंटानादकरावए॥ सुरलोकेजीगो
षणाएहदेवरावए॥ नरक्षेत्रेजीजिनवरज
न्ममहूउअछे ॥ तंसुभक्तेजीसुरपतिमंदि
रगिरिअछे ॥ त्रोटक ॥ गछेतीमंदिरशिख
रऊपर ॥ नुवनजीवनजनतणा ॥ जिन
जन्मउत्सवकरणकारण ॥ आवजोसवि
सुरगणा ॥ तुम्हशुद्धसमकितथासेनिर्मल
॥ देवदेवीनिहालतां ॥ आपणापातिकस
र्वजासे ॥ नाथचरणपखालतां ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ एमसांभलीजीसुरवरकोडीबहु
मली ॥ जिनवंदनजीमंदिरगिरिसाह्मीच
ली ॥ सोहमपतिजीजिनजननीघरेआवी
या ॥ जिनमाताजीवंदीस्वामीवधावीया
॥ त्रोटक ॥ वधावीयाजिनहर्षबहुलो ॥
धन्यहुंकृतपुन्यए ॥ त्रैलोक्यनायकदेवदी
ठो ॥ मुझसमोकुणअन्यए ॥ हेजगतज
ननीपुत्रतुमचो ॥ मेरुमज्जनवरकरी ॥ उ
त्संगतुमचेवलीयथापीस ॥ आत्मापुन्येभ
री ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजीजिननिजक
रकमलेठव्या ॥ पंचरूपेजीअतिशयमहि
माएस्तव्या ॥ नाटिकविधीजीतववत्रीस
आगलवहे ॥ सुरकोडीजीजिनदरिशणने
उमहे ॥ त्रोटक ॥ सुरकोडकोडिनाचतिवली
नाथनागुणगावती ॥ अपछराकोडीहाथ
जोडी ॥ हावभावदेखावती ॥ जयोजयो

तुंजिनराजजगगुरु ॥ एमदेआशीसए ॥
प्राणशरणआधारजीवन ॥ एकतुंजगदी
शए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरिवरजीपांमुकव
नमांचिहुंदिशे ॥ गिरिशिलपरजीसिंघास
णसासयवसे ॥ तिहांआणीजीशक्रेंजिन
खोलेग्रह्या ॥ चोसठेजीतिहांसुरपतिआ
वीरह्या ॥ त्रोटक ॥ आवीयासुरपतिसरव
नक्के ॥ कलशश्रेणिबनावए ॥ सिद्धार्थप
मुहातीर्थउषधी ॥ सर्ववस्तुअणावए॥अ
चुअपतितिहांहुकमकीनो॥ देवकोमाको
मीनें ॥ जिनमझनार्थंनीरलावो ॥ सव्वेसु
रकरजोमीने ॥ ५॥ ढाल ॥ आत्मसाधन
रसी ॥ देवकोमीहसी ॥ उह्लसीनेंधसी ॥
क्षीरसागरदिशी॥पउमदहआदिदह॥गंग
पमुहानई ॥ तीर्थजलअमरलेवाजणीते
गई ॥ १ ॥ जातिअमकलशकरी ॥ सहस

अठोत्तरा ॥ छत्रचामरासिंहासनेशुन्नतरा ॥उपगरणपुप्फचंगेरीपमुहासवे ॥ आग मेनाषीयातेमअणीववे ॥ २ ॥ तीर्थजल नरीअकरीकलशकरीदेवता ॥ गावतान्ना वताधर्मउन्नतरता ॥ तिरीयमरअमरनेंह र्षउपजावता ॥ धन्यअम्हशक्तितिशुचिन क्तिएमन्नावता ॥ ३ ॥ समकितबीजनिज आतमआरोपता ॥कलशपाणीमिसेन्नक्ति जलसींचता ॥ मेरुसिहरोवरेसर्वआव्या वही ॥ शक्रउछंगजिनदेखीमनगहगही ॥ ॥४॥ गाथा ॥ हेहोदेवाअणाइकालोअदि हपूव्वोतिलोयतारणोतिलोयबंधु ॥ यि हत्तमोहविध्वंसणो ॥ अणाइतिणावेणा सणो ॥ देवाहिदेवोदिहवो ॥ दिहवोहिअ कामेहिं ॥ १॥ ढाल ॥ एमपन्नणंतवणन्न वणजोईसरा॥ देववेमाणीयान्नत्तिधम्मा

यरा ॥ केबिकप्पठिया ॥ केविमित्ताणुगा
केविवरमणवयणेणअहिउबगा ॥ १ ॥
॥वस्तु॥तत्र अच्चुअ इंद्रआदेशकरजोमी
सविदेवगण लेईकलशआदेशपामीअ॥
अद्भुतरूपसरूपजुअ॥कवणएहपुत्रंतसा
मीअ॥इंद्रकहेजगतारणो॥पारगअम्हपर
मेस ॥ नायकदायकधम्मनिही ॥ करीए
तसुअभिषेक ॥ १ ॥ ढाल ॥ तीर्थकमलव
रउदकनरीनें॥पुष्परसागरआवे॥एदेशी
॥पूरणकलशशुचिउदकनीधारा ॥ जिनव
रअंगेनामे ॥ आत्मनिर्मलनावकरंता ॥
वधतेशुनपरिणामे ॥ अच्चुतादिकसुरप
तिमज्जन ॥ लोकपाललोकांत ॥ सामानि
कइंद्राणीपमुहा ॥ एमअभिषेककरंत ॥
॥ १ ॥ गाथा ॥ तवईशानसुरिंदो ॥ सक्कंप
भणेइकरीसुपसाउ ॥ तुमअंकेमहुता

उ ॥क्षणक्षिणमित्तंमिअप्पेअ ॥ तासक्किं
दोपभणेई ॥ साहमीवछलंमिवक्कलाहो॥
आणाएवंतेण ॥ गिएहहोउकयछानो
॥१॥ ढाल॥ सोहमसुरपतिवृषजरूपेंकरी
नमनकरेप्रभुअंगे॥ करीअविलेवणपुष्फ
मालठवी ॥ वरआनरणअनंग ॥ तवसु
रवरबक्कूजयजयरवकरे ॥ निश्वेधरीआनं
द ॥ मोक्षमार्गसारथपतिपाम्यो ॥ भाज
सुंहवेजववफंद ॥ १ ॥ कोमबत्रीससोवन्न
उवारी ॥ वाजंतेवरनाद ॥ सुरपतिसंघ
अमरश्रीप्रभुनें ॥ जननीनेंसुप्रसाद॥आ
णीथापिएमपयंपे॥ अम्हेनिस्तरीआआ
ज ॥ पुत्रतमारोधणीअम्हारो ॥तारणत
रणजिहाज ॥ २ ॥ मातजतनकरीराख
जोएहने ॥ तुम्हसुतअम्हआधार॥करेजि
नभक्तिउदार ॥ निअनिअकप्पगयासवि

निर्ज्झर ॥ कहेताप्रभुगुणसार ॥ दीक्षाके
वलज्ञानकल्याणक॥इछाचित्तमझार॥३॥
खरतरगछजिनआणारंगी ॥ राजसारउ
वज्झाय॥ज्ञानधर्मदीपचंदसुपाठक ॥ सु
गुरुतणेंसुपसाय ॥ देवचंदजिनभक्तेगाउ
॥ जन्ममहोत्सवछंद ॥बोधबीजअंकूरोउ
लस्यो ॥ संघसकलआनंद ॥४॥ कलश॥
एमपूजाभक्तेंकरो ॥ आत्महितकाज॥ त
जिविभावनिजभावमां ॥ रमताशिवरा
ज॥ एमपूजा०॥१॥कालअनंतेजेहुआ॥
होसेजेहजिणंद ॥ संपइश्रीमंधरप्रभु॥ के
वलनाणदिणंद ॥ एमपूजा० ॥ २ ॥ ज
न्ममहोत्सवएणिपरे ॥ श्रावकरुचिवंत॥
विरचेजिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदनखं
त ॥ एमपूजा०॥ ३ ॥ देवचंदजिनपूज
न ॥करताभवपार ॥ जिनप्रतिमाजिना

साखी ॥ कही सूत्रमझार ॥एमपूजा०॥
॥ ४ ॥ ॥ इतिश्रीदेवचंदजीकृतस्नात्र
पूजासंपूर्णा ॥